आखर हिंदी पत्रिका

An International Peer Reviewed Referred Online E-Journal

E- ISSN - 2583-0597; खंड 4/अंक 2/जून 2024

अनुक्रमणिका

संपादकीय — प्रो. प्रतिभा मुदलियार — 103-104

शोधालेख

- वाजिद के काव्य पर ओशो का चिंतन — गुलाब सिंह — 105-113
- विस्थापितो' की पीडा : पत्थलगडी कविता संकलन के विशेष सन्दर्भ में — डॉ.उषस.पी.एस — 114-119
- ललमनियाँ : स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति — अमृता पासी — 120-124
- असग़र वजाहत कृत "कैसी आगी लगाई" उपन्यास में व्यंग्य का स्वरूप — नाज़िया परवीन — 125-129
- लोकमंगल के कवि: संत बूला (बुल्ला साहब) — डॉ. वन्दना श्रीवास्तव — 130-138
- साहित्य और मीडिया का अंत:संबंध — डॉ. प्रतिभा प्रसाद — 139-148
- हिंदी नवजागरण कालीन युग के निबन्धों में तत्कालीन समाज और राजनीतिक छवियाँ — आँचल सिंह — 149-156
- श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतना — [1]निर्मला जोशी, [2]नवीन नाथ — 157-162

लेख

- आते हैं ग़ैब से ये मज़ामीं ख़याल में — डॉ. आशुतोष कुमार — 163-165
- दक्षिण भारत में हिंदी और हिंदी साहित्यकार — प्रो.प्रतिभा मुदलियार — 166-171

कहानी

- लॉकडाउन — डॉ. सरला सिंह"स्निग्धा" — 172-175

कविताएं

- अब का होई — लालजी यादव — 176-177
- आ सको आओ — प्रो.प्रतिभा मुदलियार — 178-179
- धरती — डॉ. सरला सिंह"स्निग्धा" — 180-181
- नयी पीढ़ी??? — प्रो.प्रतिभा मुदलियार — 182-183
- मौत — हूबनाथ — 184-186

****